क्या नाम दूँ!

क्या नाम दूँ!

अप्रमेय मिश्र

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली-110 002

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
फोनः 2327 0497, 2328 8285
फैक्स : 011-2328 8285
E-mail: kanishka_publishing@yahoo.co.in

प्रथम संस्करण-2017

ISBN: 978-81-8457-753-2

भारत में मुद्रित

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द-संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

माता-पिता के श्री चरणों में......

—अप्रमेय मिश्र

अपनी ओर से

अपनी ही कविता के विषय में कुछ कहना अथवा लिखना मेरे लिए हमेशा असहज रहा है। जब भी मित्रों ने किसी खास कविता में कुछ दिलचस्पी दिखाई और उसके विषय में जानना चाहा तो उस कविता को पढ़ने अथवा पन्ना उलटने के अलावा मैं और कुछ कर न पाया। शायद यही स्वभाव और रंग ही मेरी कविताओं की रीढ़ है। अपनी कविताओं को ज्यादातर मैं लिखकर दोबारा पढ़ता नहीं या कभी–कभार कवि–मंडलियों में जब अपनी कविताओं का वाचन करना होता है तो इधर–उधर लिखी कविताओं को जब खंगालता हूँ तो इसी आशय से कि शायद मैं जो कहना चाहता हूँ उसके आस–पास की कोई कविता मुझे मिल जाए लेकिन, ऐसा होता नहीं। जब अंतस में या कोई ऐसी घटना जो मन को कचोटती है तो उसी के बहाने से पुनः कोई कविता अनायास ही निकल आती है अगर सत्य कहूँ तो मैं क्या और क्यों लिख जाता हूँ इसको स्वयं मैं नहीं समझ पाता बस यह जानता हूँ कि कविता लिखने के अलावा मेरे पास और कोई उपाय नहीं रहता। ऐसा मुझे लगता है कि कविता तो दूर की बात रही, जो कुछ भी मैं समझता हूँ उसको व्यक्त करने की भाषा को ही नहीं पकड़ पाया हूँ और जहाँ–जहाँ विचारों में कुछ समझने का अंश मात्र भी मेरी कविताओं अथवा विचारणा में दावा सा दिखाई पड़ता है वहीं–वहीं वह जो कुछ के लिए लिखा गया है वह असल में फिसल चुका होता है। जो कुछ लिखा ऐसा नहीं कि उसका कोई अर्थ नहीं है

पर हाँ जो कुछ नहीं लिख पाया वही मैं अपनी कविताओं में लिखना चाहता था। मेरी इन कविताओं से काव्य–संसार में क्या परिवर्तन आएगा यह तो मैं नहीं जानता पर इन कविताओं को पढ़ कर अगर किसी को वह जो मैं नहीं कह पाया उसकी तरफ इशारा भर मिल जाए तो मैं अपने लिखने को सार्थक मानूंगा।

vie; feJ

अनुक्रमणिका

ykx fglkch gS

हम रखते हैं
दिन का हिसाब
सुबह से शाम तक,
हम रखते हैं
जिंदगी का हिसाब,
हमनें साँसों तक के हिसाब
मशीनों से जोड़ रखे हैं,
हमनें इतिहास
भूगोल विज्ञान
काव्य कला सबको
हिसाब में जान रखा है,
हमनें मरने का हिसाब
हॉस्पिटल के हिसाब से
प्यार का हिसाब
जवानी से
और धर्म का हिसाब
जाने कितने क्रिया–कर्मों से
जोड़ रखा है,
हम लोग हिसाबी हैं
ये जान कर मुझे
अच्छा नहीं लगता
आप को कैसा लगता है
यह जान कर कि
आप भी हिसाबी हैं

vik#"k;k gq ykBh

एक लाठी
जाने कहाँ से आ गई चित्त पर
पता नहीं,
कोई कैसे बताए उसकी मूँठ
वीणा सी झंकृत करती है
हृदय के तार,
दुनिया में प्रतीक है लाठी
बूढ़ों के लिए
अपाहिज के लिए
असहाय के लिए,
मैं देखता हूँ
सपनों के बाहर जब भी लाठी
पहाड़ों का शिखर
घने–घने जंगल
और जिंदगी का अनगढ़पन
वहीं–वहीं अनायास
बीच में खड़ी
मिल जाती है लाठी
तुमने देखा क्या कभी
गुलाब बेला चमेली
के नीचे जुड़ी हुई
प्रकृति सा खड़ी हुई
आदमी में रीढ़ सा तनी हुई
कुँए के ऊपरी गोलार्ध पर
औंधी लेटी हुई
और विचारों में
कलम सा लिखती हुई
अपौरुषेया लाठी।

x|ykeh

कभी–कभी लिखना
गुलामी बन जाता है
शब्द सलाखों से चारों तरफ
और भाव दरवाजे पे
ताला नुमा लटक जाते हैं,
जाने किसकी जेब में
पड़ी है जिंदगी के
व्याकरण की चाभी,
मैं अंदर सलाखों के
जब–जब ताकता हूँ बाहर
आसमान सा फैल जाता हूँ
जहाँ रोज निकलता है सूरज
जहाँ रोज चमकते हैं तारे,
मैं देखता हूँ
मैं नहीं भी देखता
वे देखते हैं
वे नहीं भी देखते
मैं चुप हो जाता हूँ
पर वे चुप नहीं होते,
यहाँ गुलाम सा उदास
मैं उन्हें बता नहीं सकता
कि वे जो खुश हैं उन्हें
खुशी का अहसास नहीं
कि मैं जो यहाँ दुखी हूँ
उसके हेतु का मुझे पता नहीं।

gkssus ds ckn

दोपहर के बाद
शाम होने के बाद
वो कहते हैं रात हो गई
रात हो गई होती है
जैसे हो जाती है सुबह
रात हो जाने के बाद,
तुम्हारे हो जाने के बाद
वे तुम्हारे सामने
दोहराते हैं बार–बार एक नाम
तुम हो जाते हो नाम
हो जाना जरूरी है
ये तुम नहीं वे सब कहते हैं
जो हो गए हैं एक नाम,
वे कहते हैं गांधी था एक नाम
वे कहते हैं भगत था एक नाम
वे कहते हैं भारत है एक नाम
जिसकी आकृति
खींची होगी कभी किसी चित्रकार ने
अपना चूल्हा जलाने के लिए,
शाम के ढलने के बाद
रात होने के पहले
धीरे–धीरे मरने के पहले

मैं लौटा देना चाहता हूँ
अपना नाम
यह देश जिसे बताया गया मेरा देश
उसे तुम्हें ही मुबारक कर
मैं जी लेना चाहता हूँ
एक शाम।

bZ'oj dks ekurk gS

वह प्रार्थना करता है
पुकारता है भगवान् को
गाता है गीत
बजाता है वीणा, वंशी और करताल
सदियों से
अपनी समझ से
रचता है वाक्य
करता है प्राण प्रतिष्ठा
जीवन में भाषा की
किसी ने अब तक
नहीं देखा ईश्वर को
सदियों से इसे समझता है
कितना असहाय है
और कोई उपाय भी तो नहीं
यह जानता है
शायद इसी लिए
वह ईश्वर को मानता है।

/khjs&/khjs ij[krk gS

हम हो रहे हैं धीरे–धीरे राजी
और इसे ही हम अपनी
किस्मत समझ लेंगे,
कोई अचानक नहीं कहता है सच
धीरे–धीरे परखता है
वह तुम्हारा तापमान,
उसे मालूम है
हलुआ बनाने की विधि
आदमी को गुलाम बनाने में
कैसे काम में लायी जा सकती है,
आदमी के सपने बहुत पुराने हैं
यहाँ तक कि आदमी से भी पुराने,
आदमी और तड़प
शब्दों में कितने अलग हैं ?
यह किसी छटपटाते
हुए आदमी से पूछो,
जिंदगी उन्ही के पास है
जिनके हाथों में
पानी से भरा गिलास है,
वो जानते हैं इसे और
वो भी छटपटाते हैं
कि गिलास पानी का
वह खुद भी नहीं पी पाते
न पिला पाते हैं।

e> ekye g

मैं तो राजी हूँ
तुम्हें स्वीकार करने के लिए
और जानता हूँ
तुमने अब तक
सिर्फ जिंदगी को
किताबों में समझा है,
और डरने की खुराक तुम्हें
जो आध्यात्मिक बनाती है
उसे तुमने मंदिर, गिरजाघरों
या फिर मस्जिद की चौखट पे
नाक रगड़ते हुए पाया है,
तुमने जिस प्यार में
कुर्बानियों की कसमें खायीं हैं
वह देह से देह तक की यात्रा से
ज्यादे कुछ और नहीं,
मैं तो कह दूँ
और इसके बावजूद भी
तुम्हें स्वीकार कर लूँ
पर तुम्हारे लिए
ये सब कहना तुम्हें खो देने जैसा होगा,
मुझे मालूम है कि मेरी यह समझ
कितनी भी सत्य क्यों न हो
तुमसे ज्यादे कीमती नहीं।

dfork

मैंने तुम्हें ढूंढा
वसंत के आने के पहले
और बाद भी,
मैंने तुम्हें ढूंढा
बारिश के पहले
और बाद भी,
खिलते झरते गिरते सूखते
गिरे हुए पत्तों के बीच
और न जाने कहाँ–कहाँ
तुम कहाँ हो
कि मैं तुम्हें भेज सकूँ पाती,
मैं वहाँ भी गया
जहाँ रात न जला था चूल्हा
वहाँ भी जहाँ था शमशान
और वहाँ–वहाँ भी
जहाँ गुना जा रहा था प्रपंच,
तुम्हारा पता इतिहास या फिर भविष्य
के किस पन्ने में लिखा है
जिससे मैं तुम्हारे नाम
भेज सकूँ पाती,
मैं तुमसे नाराज हूँ कविता
मैं हैरान हूँ कविता
कि मैं तुमसे
क्या कहूँ कविता।

gk tku d ckn

बारिश हुई
और याद आया
इसके पहले भी वह
बहुत बार आई थी,
आदमी है
समझ आया
वह सदियों से
इसके पहले भी था,
मैं हूँ
याद आया
इसके पहले भी मैं था,
पर बहुत पहले नहीं
स्मृति कितनी भी
पैनी कर लूँ
मेरा होने की घटना
कभी मेरे लिए नहीं घटी
होने का स्मरण
कभी–कभी सालता है
बारिश हो जाने के बाद
भीड़ गुजर जाने के बाद,
तुम्हें कैसे शामिल कर सकूँ
कि तुम सुन सको
बारिश लोग और
मेरे बीच
सन्नाटे का बयान।

c<kik

नई दुनिया में बुढ़ापा
एक सूचना है,
सफेद होती दाढ़ी
बच्चों को मालिक
बनने की सफेद वसीयत
हो जाती है
और कबूतरों सा उन्हें
मुक्त गगन में
छोड़ जाती है,
बूढ़ा होना नई दुनिया में
समाज के लिए भरोसा है
लड़कियों के लिए वरदान
बच्चों के लिए खिलौना
और अपने लिए
अभिशाप।

crkuk pkgrk g

मैं तो चला जाऊँगा
वहीं जहाँ से आया था
ये बात उतनी ही झूठ है
जितना मेरा यहाँ होना सत्य है,
यहाँ जिन्हें चाहता हूँ
कुछ बताना कि
मैं जो न बता सका तुम्हें
उसमें सत्य कुछ नहीं था
झूठ के सिवा
और झूठ तुम जानते हो उसी तरह
जिस तरह मैंने सत्य को जाना,
मेरा सत्य सत्य नहीं
तुम्हारे ही झूठ का
प्रतिबिम्ब है
मैं बस इसे ही बताना चाहता हूँ
पर क्या करूँ
तुम चूक न जाओ
इससे घबराता हूँ ।

vkneh dk jguk

सपने धीरे–धीरे
विदा हो जाते हैं
उम्र के हिसाब में
जिन्दगी के मायने बदलते हैं
आदमी की आँखों में
ढलती उम्र में भरोसे भी
बदल जाते हैं,
एक चश्मा
एक दवाई
और रास्ते में
चलने से पहले
एक लाठी भी
जीवन साथी हो जाता है,
हाथों में थरथराती है किस्मत
पाँव में लड़खड़ाती है जिंदगी
आदमी का रहना
एक उम्र के बाद
किसी किताब की कहानी को
पढ़ते समय पन्ने को पलटते हुए
उसके चिपक जाने जैसी
हो जाती है।

chr x;k

जाड़े की एक और शाम
बीत गई
बीत गई दोपहर की
गुनगुनी धूप
मैं भी बीत गया
जोहते–जोहते
विराम,
नक्षत्रों से न ही आकाश से
चाँद और तारों से भी नहीं
कहीं से भी
कोई न आई आवाज,
आदमी पर भरोसा था
चूक गया
एक ऋतु की तरह
मैं बीत गया।

fdruk dfBu gk tkrk g

कोई सच कहना
तब कितना कठिन
हो जाता है
जब किसी का झूठ
बयां हो जाता है,
आँखों–आँखों में मिल जाती है
देखो कैसे तस्वीर
कि वह जानता है
और फिर धीरे–धीरे
फना हो जाता है।

ekyle ugh

मैं कुछ लिख दूँ
क्या ?
मालूम नहीं,
लो
आ गया खयाल
फूल का
कि वह तो मुरझा गया होगा
किताब में रखा हुआ।

ftUnxh gS

छोड़ देना है
या छूट जाएगा
कोई उपाय है ?
तलाशते हुए
धीरे–धीरे
इन सब के बीच
जिन्दगी को जीना
जिन्दगी है,
तुम भी नहीं
मैं भी नहीं
कोई भी तो नहीं
जो दिलासा दे सके
फिर भी
भरोसे की आँख टटोलना
जिन्दगी है,
फेहरिस्त का हिसाब
झूठा है
जानते हैं सब यहाँ
फिर भी जोर से
आवाज लगाना
मिट जाएगी जो पहचान
उसे निभाना
जिन्दगी है।

mls Hkwy tkuk gS

मेरे लिए लिखना
न जानते हुए उसे
भूल जाना है,
मेरे लिए भूल जाना
उस गुमनाम के सामने
प्रार्थना है और
आँख न मिला पाना
वेदना है,
शब्दों में
फूल सा
कि
सुगंध सा
कि
आह सा...।

gesa irk gS

गुजरना किसी का
याद न रहा कभी
पर किसी का आना
मेरे लिए जरूर ले आता है
अजुरी भर सवाल,
मेट्रो शहर के माफिक
आकाश से मग्गे में
टुकड़े–टुकड़े में मिलती है धूप
कतरा–कतरा कटती है जिन्दगी
कि अटकी रहती हैं साँस
बारहवीं मंजिल पे
खिड़की से किसी गुमनाम
पेड़ के पत्ते को ताकते,
हमें पता है
सीढ़ियों से चलने की आती आवाज
नहीं रुकेगी हमारे दरवाजे पे
पर आना किसी का
इस शताब्दी में
गिलास भर पानी की तरह
गले को आँखों सा
नम कर जाता है।

dHkh&dHkh

कहीं से लौट कर आना
कभी–कभी
कहीं चले जाना होता है,
समय की आँच
बहुत धीरे–धीरे पकाती है जिंदगी
भाप बनते हैं सपने सतत
मस्तिष्क की प्लेट के नीचे,
कोई हटाए ढक्कन
नहीं तो
भात की तरह
उबलता ही रह जाएगा
जीवन।

l|u jgk g|

हम चले जाएँगे एक दिन
जैसे चला गया वसंत
फूल झर गए,
जैसे चली गई बरसात
नदी–तालाब सूख गए,
मैं खोजता हूँ अपना हेतु
और जैसे के स्थान में
किसी का भी नाम नही रख पाता,
पर मैं झर रहा हूँ
कि मैं सूख रहा हूँ
अपने अस्तित्व में
आत्म का नाम गढ़े
अपनी तड़प
सुन रहा हूँ।

dkbl

कोई सुबह सा
शाम हुआ जाता है
कोई धुआँ सा
आग हुआ जाता है
अपनी हस्ती को भी
बिखरता देख
है कोई जो
बाग–बाग हुआ जाता है,
जिंदगी मिली तो सभी को
इक ही मगर
हिस्से–हिस्से में कोई
ख़ाक हुआ जाता है,
किसी ने कहा
किसी ने सुन लिया
कुछ अनकहा इसी में
राज हुआ जाता है।

viu e

आह
शब्द
स्वर
रूप
अपने में गहन
मुझे पहचाने
बार–बार गले लगाए
कहीं दूर ले जाए !

el le>rk jgk

मैं खोजता रहा
अपना सहचर
बाद बहुत बाद में
खुला अर्थ
बंद मुट्ठी के खुल जाने जैसा,
मैं समझता रहा
प्यास सूखे गले को नम करती है
उधर खुली हथेली ने जब पकड़ा हाथ
जाने का समय नजदीक था,
इच्छा के दानव ने
घोटी मेरी साँस
सहचर का पुनः
छूट गया साथ।

rEgkjs fy,

मैं लिख सकूँ
कोई गीत
तुम्हारे लिए
जिसमें छंद क्या पद क्या
स्वर क्या
किसी की प्रतिबद्धता न हो,
तुम गाओ उसे
बिना किसी संकोच के
कि सुन सके तुम्हारा हृदय
कि डोल सके तुम्हारे
अंतस का जंगल,
कोई चिड़िया
कोई जुगनू
कोई भी पतंगा
बिना आहट के
मिला सके तुम्हारे गीत में
सृष्टि का स्वर मंगल।

n[krk g

रात है या गुलदस्ता...
याद !
जिंदगी है या मंच...
नाटक !
आदमी है या हथियार...
कत्ल !
ईश्वर है या समाचार...
स्वप्न !
सवाल है या जवाब...
इतिहास !

dj ldrs g

हम कर सकते हैं
कुछ इन चींटियों के लिए,
हम पत्तों को काँटों से
हवा में क्षतिग्रस्त होते
बचा सकते हैं,
रुके संडास के जल को
ईंट हटा कर
बहाव दे सकते हैं,
हम सूखती दूब को
पानी की कुछ बूँद डाल कर
अगले बसंत तक
हरा रख सकते हैं,
हम जुगनुओं को इतिहास से
गौरैया को घर के आँगन से
बूढ़ों की बीतती जिंदगी में
जवानी का साथ दे कर
थोड़ी और गहरी साँस भर सकते हैं,
हाँ हम खुदा को याद करते हुए भी तो
यह सब काम कर सकते हैं।

vu|ifLFkr&1

रात कैसे पसर जाती है
देह के बाहर से धीरे–धीरे
आत्मा के अंदर,
यहीं कहीं यहीं से
जाने कब से
सिलसिले में गा रहे हैं
झींगुर सामवेदी गान,
जाने कौन सुनता है
झाड़ियों के बीच से इनको,
तितलियाँ जाने किन घरौंदों में
चली जाती हैं वापस,
मैं देखना चाहता हूँ
जब–जब गौर से इनको
कोई अनादि मीठी लोरी
मेरे कानों में गुनगुना जाता है
सतत जिंदगी का कारोबार
अपनी धार में चला जाता है।

vu|ifLFkr&2

कुछ शब्द
कुछ रंग
कुछ बात
जिसे कह न सका कभी
उसे सुन लिया उसने
रात के अँधेरे में,
फिर पूछा अगली रात
कि जोड़ो कुछ सिलसिला,
मैं चुप था उसी तरह
जैसे वह चुप था उस रात।

dN ,slk jgk

रात जब–जब आई
खामोशी लाई
चीर डाला उजालों ने
कान का पर्दा,
जिंदगी ने दिया अपना अर्थ
सवालों में,
मैं सुनता रहा
बुनता रहा
राह पर चलता रहा
अपने होने में
अपने मिटने को
दिन ब दिन
गुदड़ी की तरह
बुनता रहा।

,slk lalkj ik;k

हमने जंगल में आग पाई
बची राख भी माथे से लगाई,
हमने देहरी पर दीप जलाए
अपने हाथ जुड़े पाए,
हमने ध्वनि में
शब्द की चिंगारी पाई
शास्त्र के धुएँ सुलगाए,
धीरे–धीरे समझा हमने
अपने भीतर की ज्वाला
जिसके ताप से
हो सकती थी दुनिया
प्यार सी गुनगुनी
पर हमने उसे दबाया
जिसके एवज में
ऐसा संसार पाया।

;g ,d gfFk;kj gS

काबलियत एक ऐसा हथियार है
जिसे सामूहिकता का आशीर्वाद है,
देखो कैसे मरता है आदमी
जिन्दा रहते हुए भी
पुर्जे की तरह,
हम जिसे रहनुमा समझते हैं
और जिससे गुहार लगाते हैं
उसने भी काबलियत का सर्टिफिकेट
इन्ही व्यवस्थाओं से अर्जित किया है,
आदमी का जिन्दा रहना
आदमी की तरह गुनाह है,
तुम दरिंदे हो तो काबलियत
तुम्हारे लिए दो कौड़ी की चीज है,
इस व्यवस्था में इन सब की तरह
जीना चाहते हो तो समझो ...
काबलियत एक कागज का नाम है
जिसे ट्रांसफर करने का अधिकार
पुरखों के पास है।

xjhc dk cPpk

गरीबों की पढ़ाई
किताबों से नहीं होती
जैसे पैसों के इतिहास से
रोटी नहीं मिलती,
वह बुलाता है किसान खड़े खेत में
अपने बच्चे को
पूछता है इशारों में माँ ?
तोतली आवाज में
खलिहान बोल पाता है...
पूछता है हल का दूध पिया है कभी ?
अपने सर को वह हिलाता है...
जोर से उसके हाथों को
जब हल के हत्थे पर रगड़ता है
बच्चे की आँखों से दो बूँद छलकता है
मजाक–मजाक में वह
दूध और किसानों का चरित्र
समझता है।

vkneh dk gkuk

थोड़ा गहरे अर्थ में
ये हरे–हरे तोते
वृक्ष के पत्तों के गान हैं,
प्रेम के क्षण में
मुक्ति का अर्थ जीवित हो उठता है
आकाश में चिड़ियों के पंख सा
फड़फड़ाता हुआ,
कोई शहर हो कोई भी जमीन
ये सारे पहाड़ नदी
झाड़–झंखाड़
जिंदगी के फैलाव हैं,
और आदमी के होने में
यह सब
महज एक सवाल हैं।

e! iNrk g| loky

कविताओं के इतर
समाप्त होना किसे कहते हैं,
डूबने के पहले
निस्सहाय आँखों की दृष्टि
कैसे उतर आती है चेहरे पर,
मूक आदमी किस भाषा में
बोल रहा होता है,
अर्थहीनता किसकी कचोटती है
शब्दों की
भाषा की
आदमी की
या फिर जिंदगी की ?
यह सवाल कभी
हल हो सकें हैं क्या ?
आदमी से बाहर
या फिर गाथाओं के अंदर.....
मैं टटोलता हूँ अपने आप को
और पूछता हूँ चुप हो कर
खुली आँखों का सपना
या बंद आँखों के सपने में
भयावह कौन है ?

vK; dh Nko e

इसके पहले
वह घेरते–दौड़ाते रहे
या फिर मैं भागता रहा,
जाने कब एक–एक सवाल
लद गए पीठ पर
दो हाथ हैं
न पीठ को टेके हुए
न हृदय को सम्भाले हुए
अगल–बगल
जो ज्ञात और अज्ञात के
अनुचर हैं,
मैं अपने में पूरा अज्ञेय हूँ
ज्ञात....अज्ञात के बीच
'और' के बोध–सा
जिसकी छाँव मुझे
जला रही है।

fgnk;r

साँस कहीं बिखरती है
टूट जाती है
ज्यादेतर लेते हुए,
तुमने पढ़ा इन वाक्यों को
छोड़ी नहीं होगी साँस
ली होगी धीरे–धीरे
टूटता हुआ जानने के साथ,
यह यकीन नहीं
नियम है !
आदमी की तरह
उसके शक्ल की तरह
उसके प्यार की तरह
जो मुझे छोड़ने की
हिदायत देती है
कुछ करने के पहले
साँस लेने के पहले
तुम्हें कुछ कह देने के पहले।

dc rd

आदमी कहाँ लिख पाता है
वही...वही
जो लिखना चाहता है,
कहाँ रह पाती है कविता
जिस क्षण भी वह आती है,
उसको याद करने की विधि
कहीं खोजी जा सकी है क्या ?
कितनी बार और कितनी बार
तुम उसे फांसी के फंदे पर चढ़ाओगे
हिंदी में अंग्रेजी में
या उर्दू फारसी में,
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता
कि किस ब्रांड की चिगदी लगी है
तुम्हारे शब्द की रस्सी में,
कब तक उसे कुछ बेहतर रचने की इच्छा में
उसका दम घुटाओगे।

jg tk,xk

आकृति ही तो है
खींचने दो
बदल जाएगी,
अभिव्यक्ति ही तो है
खिलने दो
बिखर जाएगी,
आग ही तो है
सुलगने दो
जल जाएगी,
लहर ही तो है
मचलने दो
बह जाएगी,
जो चला गया
जाने दो
चला जाएगा,
जो बचा है
रहने दो
रह जाएगा।

l|fo/kk

बूढ़ा होना
सिर्फ मृत्यु के करीब होना नहीं
दूसरों को उसके असहाय होने
और कुछ झूठ को
उजागर करना भी है,
अचेत जब कोई दूसरा
कुटुंब में अंतिम साँस ले रहा होता है
तब परिवार उसे महज
सुविधा ही तो दे रहा होता है
विदाई का,
विदा कोई बूढ़ा नहीं होना चाहता
मरते आदमी की भाषा
और मर रहे आदमी से
कोई संवाद किसी सभ्यता ने
स्थापित किया क्या ?
बहुत गहरे में देखो
कबीर आज भी लुकाठी लिए
चिल्ला रहे हैं
तुम्हारे शास्त्र आचार–विचार
और कानून
सुविधा की भाषा और
निरीहता से उपजे चालाकी के
दस्तावेज हैं,
कोई बूढ़ा मरता नहीं
पहले ही मार दिया जाता है,
इतिहास में झांकों
सुलतान से लेकर भिखारी तक के मृत्यु
की फेहरिस्त चस्पा है,
कानून प्रमाण को देखता है
गौर से देखना उसकी आदत नहीं,
उसे बस ठप्पा लगाना है
सुविधा के लिए
और कुछ नियम...नियम नहीं
हत्या करने के हथियार हैं
जिसके आगे मनुष्यता असहाय है।

e! vijk/kh g¡

जिन्होंने बौना किया है जीवन
वह स्वीकार नहीं करेंगे
उन्हें खुद भी नहीं पता
अपना अपराध पर
जीवन का गणित अलग है
और उसका प्रेम भी
उसके दंड का विधान
लोहे की सलाखों से नहीं
सन्नाटों की लहरों में डुबाता है,
शब्दों की दलील और आचार–विचार के शास्त्र
उन्हीं बौने लोगों द्वारा
विकसित किए गए मंत्र हैं
जिस पर अच्छे आदमी की नाव
डोलती है,
मैं अपराधी हूँ यह घोषणा करता हूँ
कि मैंने अब तक तुम्हारे नियम से
जीवन को समझना चाहा
तुम्हारे थोथे शब्दों से
ईश्वर को पुकारना चाहा
तुम्हारे डर से जिंदगी की हरियाली में
चोर की तरह घुसना चाहा,
हाँ मैं अपराधी हूँ इस तरह
कि सत्य को जान कर भी
इसी तरह जीना चाहा।

vk[khj e!

आखीर में
चले जाना ही तो है
रास्ते, पगडंडियों से नहीं
न ही खिड़की दरवाजे से
तुम्हारी स्मृतियों में धीरे–धीरे
घुल जाना...भूल जाना ही तो है
चले जाना,
तुम्हारे बटोरे सामान का
धीरे–धीरे कोने–कोने से
हट जाना
धीरे–धीरे तुम्हारी तस्वीर पर
धूल का जम जाना
बातों–बातों में तुम्हारी किसी बात का
जिक्र न आ पाना ही तो है
चले जाना,
चले जाना...किसी के लिवा ले गया के अर्थ से
बहुत जुदा नहीं दिखता,
जिंदगी स्पष्ट कभी कुछ नहीं कहती
उसे आदमी की फिक्र है
उसके चले जाने और कभी न लौट आने की
अनवरत चिंता भी।

c<k vkneh

बूढ़ा होना अपने हाथ से
अपनी जिंदगी की कहानी लिखना है,
सिलसलेवार कड़ियों को
अटकी जुबां से
कुछ न बन पाई जैसे
कविता कहना है,
बूढ़ा होना अपने वजूद में आदमी कम
बूढ़ा ज्यादा होना है
जिसके हाथ किसी के हाथ को
गरमा नहीं सकते
किसी की गर्माहट को
महसूस भी नहीं कर सकते,
बूढ़ा होना जिंदगी की शक्ल में
किसी अपरिचित शहर का
चौराहा हो जाना है
जहाँ कोई दूकान कोई ठेला
कोई दफ्तर भी नहीं होता
कुछ दौड़ती कुछ रेंगती
सन्न मुद्राओं के बीच
एक प्रश्नवाचक चेहरा होता है,
मैं अपनी चेतना को
दूर अपने हिस्से के बुढ़ापे में दौड़ाता हूँ
शताब्दि के इस बदलती रूप रेखा में
उसे कहीं भी खड़ा नहीं पाता हूँ।

vkneh&1

असहाय हो जाता है
आदमी
अपने ही फैलाये जाल में,
कहानियाँ सुनी होगी तुमने
बहेलिया की
चिड़ियों का झुंड
कैसे फँसता है उसमें
पर आदमी नहीं फँसता
अंत तक
असहाय होता है,
वह जैसे शब्दों में अलग है
जानवरों से
वैसे ही वह फँसता नहीं
असहाय होता है
शब्द में वाक्य में
इतिहास में
भूत और भविष्य में।

vkneh&2

आदमी अकेले में बैठा
देखता है
कहीं रेत में कोई पड़ा तड़पता है
उसके पास का प्रकाश
कोई दृश्य नहीं दिखाता,
आदमी अकेले में बैठा
देखता है
कुर्सियों को मेज को
और कभी–कभी
दांत सी सजी
अलमारियों में पड़ी किताबों को,
आदमी अकेले में बैठा
साँस लेता है
कोई हवा
सड़क पर गिरे
खून की महक उसके नासापुटों तक
नहीं पहुंचा पाती
आदमी हाथों में
लेता है एक गुलाब
उसका रूप उसके डंठलों के
टूटने की चटक
नहीं दिखा पातीं,

आदमी देखता है
और कभी–कभी
ऊबती दीवारों सा खड़ा रहने की तरह
एक उम्र तक
उन्हीं सा खड़ा रह जाता है,
उसके पास हैं
दो पांव
दो हाथ
दो आँख
दो कान
जिससे वह जिंदगी चलाता है
किसी तरह बच–बच कर
वह मर जाता है।

lR;

कोई सत्य भीतर कहीं
अब तक मिला नहीं,
गोया उन्होंने कहा
यह तरीका नहीं
सत्य... यही कि
कुछ बाहर छोड़ना है
कुछ क्या सब कुछ
जो अन्दर का नहीं,
मैं झाँकता हूँ अन्दर
समुद्र नहीं तालाब–गड़ही–मेढ़क नहीं
कोई नाव भी नहीं
कोई कमल की सुवास भी नहीं,
घबरा कर मैं उन्हीं के पास
वापस जाता हूँ
फिर
पूछना चाहता हूँ
यह जमीन यह रास्ते
फूल–पत्ता आदमी और औरत

किसी भी चीज पर
हाथ रखने के पहले
बड़े संकोच से
पूछना चाहता हूँ
क्या छू लूँ इन्हें
और फिर ..,
चुप हो जाता हूँ।

og C;kgrk

वह ब्याहता
ले कर आई है
अपने बाप की कुल जमा–पूंजी
जिसकी पगड़ी
जगह–जगह
सेठ–सुनार, मित्रों
और गुरुवों के चौखट पर
उसनें उतारी थी,
वह ब्याहता अपने होने का अर्थ
न ही माँ के आँचल में ढूँढ सकी
न ही बाप के माथे पर,
धरती उसके विराम की नहीं
यात्रा की सड़क है
जिस पर ससुराल का रथ
दौड़ता है।
कोई भी सवार हो सकता है
और सारथि पकड़ेगा ही लगाम
वह उसे पहियों की धुरी की तरह
कभी नहीं निहार पाएगा,
ब्याहता का
ससुराल और मायका
गड़े बाँस की तरह दो छोर हैं

जहाँ वह अपने होने को
अरगनी के मानिंद
बँधा पाती है,
दोनों मुहाने पर कपड़े
गीले हो या गंदे
उसे अपनी आँखों की गड़ही में धोकर
साफ कर के सूखने के लिए
टांग देती है।

xjhc

गरीबों की झोंपड़ी
टाटियों से ढँकी जाती है
तुमने गुसलखाने में
अपनी विष्ठा के त्याग का
नाम भी 'टट्टी' रखा,
देखो...सुनो इन दोनों
शब्दों की ध्वनि
और अर्थ की समानता,
कभी छिड़ी या तुमने सुनी ?
गरीब बिना नुख्ते के भी
जिंदगी के पन्नों पर
लिखे जा सकते थें
लिखे नहीं गए
जिन्होंने नुख्ता नहीं लगाया
उन्हें शब्दों से गरीब समझा गया,
शब्दों के दलालों को
आदि–अंत के बीच संबंधों से
क्या लेना–देना
वह तत्काल का मुँह देखते हैं
शब्दकोश की कचहरी में
जज के शब्द दुहराते हैं

इसी का पैसा पाते हैं,
नई दुनिया में
किसी बड़े शहंशाह ने
गरीबों को मंत्र दिया है.....
गरीब पैदा होना गुनाह नहीं
गरीब होकर मर जाना गुनाह है
मैं चीख कर पूछता हूँ
अमीरों से
गुनाह क्या है ?
जरा इसको जोर से चिल्लाना।

r|e

रेत पर बैठे पंछी
जैसे सागरों में डुबकी
लगा आते हैं
वैसे न चाहते हुए भी
ताल–ताल घाट–घाट
तुम याद आते हो,
सालती है अंदर
बराबर कोई बंजर भूमि
देखता हूँ कभी–कभी
कुछ फूल खिल आते हैं,
राह कोई जब–जब न रहा
तुम तब–तब
खेत–खेत मेढ़–मेढ़
फुनग आते हो,
स्वांस–स्वांस जाती है आती है
हृदय के जंगल में
तुम खिलते हुए
डाल–डाल
महक जाते हो।

, d {k.k&rr {k.k

बेला गुलाब जूही चंपा चमेली
और भी जाने क्या–क्या
ये महज फूल नहीं
अस्तित्व प्रदत्त सनद हैं
तुम्हारे
कि तुम प्रेम ही हो,
महज इनमें से गुलाब कभी
तय कर लें किसी सुबह
न खिलने का
तो सूर्य नहीं उगेगा पूरब से,
ये भरोसा नहीं दावा है
जिसे दुनिया का कोई ग्रन्थ, विज्ञान
झुठला नहीं सकेगा
मेरे रहने न रहने के बाद,
ये वचन सूर्य के लिए भी ढाल बनेगा
और तुम सब के लिए
हौसले की उड़ान,
आजमाना हो तो कभी आजमा लेना
साँस भर न लेना एक–क्षण
मुरझा जाएँगे सभी फूल तत–क्षण।

d".k

कृष्ण
तुम द्रौपदी के हृदय में
सूर्य की तरह मत उगो
दुशासन के कंठ से
रुधिर बन बहो,
कहानियाँ जिन्होंने लिख डालीं
बंधे–बंधे से शब्दों में
उनके हाथों में धनुष बन
जिंदगी के इस कर्ण मंच को बधो,
आओ कृष्ण
श्रद्धावान आलसियों की श्रद्धा
और परंपरा से ऊबे नास्तिकों को
पार–अपार की फाँसी से छुड़ाओ
जिंदगी को महकाओ
विवेक की पतवार थमाओ।

iujkof`Ùk

मोची की आँख
कभी डबडबाती नहीं
चमचमाती है,
भिखारियों का कटोरा
खनकता नहीं टनटनाता है,
उनकी जिंदगी में तो ऐसा
एक बार होता है
पर इतिहास में तो इसकी
पुनरावृत्ति होती है।

nk<h

उसकी दाढ़ी
धीरे–धीरे बढ़ी होगी
साल दर साल
जुगाड़ करते दो पैसे के लिए
ताकि उनसे
चूल्हे में सुलगती रहे आग,
उसकी दाढ़ी
यों ही नहीं बढ़ गई होगी
धीरे–धीरे बढ़ी होगी
चिल्लाने के बरक्स
मौन के साथ खड़े होने में
अपने बच्चे को अस्पताल
दाखिल न करा पाने के कारण
अपने हाथों में
उसकी दर्द की कराह को
मौत तक जोड़ते हुए,
उसकी दाढ़ी
उसके लिए
उसके चेहरे की नकाब है
जिसे वह
आईने में नहीं देखना चाहता,

आज मंदिर के सामने
गुमटी के अंदर
उसकी आँखें
चाय पकाती हैं बिलकुल कड़क,
देखों उसकी दाढ़ी
द्रष्टा है आज
जो कि उसकी चेतना के साथ
हमेशा बढ़ती और गहराती रही
काली से सफेद होती रही।

xkj l n[kk

देखो इसे गौर से
कोई खून का कतरा
या कहीं पसीने की कोई बूंद भी
टपकी क्या,
देखो और पहचानो
यह कौन है
औरत है
माँ है
माशूका
देखो उसकी छाती
कोई माँस का गोला हिला क्या ?
देखो इन्हें भी गौर से देखो
कोई बच्चा
कोई बेटा
कोई शरारत उठी क्या ?
देखो शब्दों से अलग
किताबों से जुदा
आग को
जो कभी बुझ गयी थी
तुम्हारे अन्दर
वह उठी क्या ?

tk tku ldk

वह यही कि यहाँ
समय के पन्नों पर
कुछ–अकुछ के बीच
बीननी है अपने काव्य की कहानी,
बिना अभ्यास के
बीचों–बीच
किन्हीं अन्तरालों में
पूरे जोर से
अपने ही निर्देशन में
निभाना है अपना किरदार
चाक–चौबंद,
यहीं इसी जगह
सुबह उठते हुए
सूरज की रोशनी में
चाँद–तारों की परत दर परत चादर में
छुपा देने हैं अपने सवाल,
होगी फिर वही होती हुई रात
शताब्दियों के साथ
जवाबों की घंटी लिए,
तुम्हें ढूँढना है अपना जवाब
जिसके गीत गाये जा सकें
गुनगुनाएं जा सकें।

Hkhrj

भीतर अर्थ नहीं
शब्द नहीं
ऐसा कुछ नहीं
जो तुम्हारे लिए सार्थक हो,
तुमने जब–जब
जानना चाहा उसे आदतन
आँखों के प्रकाश की लाठी लिए
सिर्फ पगडंडी तलाशने का काम किया,
भीतर घर नहीं
चूल्हा नहीं
कोई ऐसा कमरा भी नहीं
जहाँ बिस्तर के सिरहाने
तुम दबा सको अपनी उदासी,
पर हाँ...
मैंने भीतर को सुना है
कभी–कभी
स्मृतियों के सहारे,
उसके रूप को ध्वनित होते हुए
किसी को पुकारने के बाद
कमरे में कुर्सी पर बैठे गूँजते हुए
मैदानों में खेलते बच्चों की
गूँज के पास खिलखिलाते हुए,

शताब्दियों की दौड़ में
किसी बूढ़े को अपनी चारपाई पर
बस एक फर्लांग की दूरी पर
पहुँचने के साथ अफनाते हुए
लगातार चल रही किन्हीं सिसकियों को
धीरे–धीरे हवा की नमी में
घुलते रहने के साथ पिघल जाते हुए,
भीतर कुछ होता नहीं
यह सिर्फ कवियों–मनीषियों को
बहलाने जैसा अलादीन का चिराग है
जिसकी बाती
जिसका तेल
और उसको दहकाने वाली चिंगारी
बाहर हाँ बाहर
तुम सब के पास है।

thou

कहीं से लौट कर आना
कभी–कभी
कहीं चले जाना होता है
समय की आँच
बहुत धीरे धीरे पकाती है जिंदगी,
भाप बनते हैं सपने
सतत
मस्तिष्क की प्लेट के नीचे
कोई हटाए ढक्कन
नहीं तो
भात की तरह
उबलता ही रह जाएगा
जीवन।

O;Fkk

हम चले जाएँगे एक दिन
जैसे चला गया वसंत
फूल झर गए,
जैसे चली गई बरसात
नदी–तालाब सूख गए
मैं खोजता हूँ अपना हेतु
और जैसे के स्थान में
किसी का भी नाम नहीं रख पाता,
पर मैं झर रहा हूँ
कि मैं सूख रहा हूँ
अपने अस्तित्व में
आत्म का नाम गढ़े
अपनी तड़प
सुन रहा हूँ।

ukVî e:p

सुबह कोई दीपक बुझा
साँझ कोई
जला जाता है,
हम चौखट के बाहर
कहीं भी हों ठिठक जाते हैं
आकाश की आश्वस्ति का हाथ निहारते
थोड़ी गहरी साँस फेफड़े में भरकर
हम लौट आते हैं
तसल्ली को होठों में दबाए,
शाम की खटिया
आराम की नहीं
जिंदगी को बिताने का
एक डिवाइस है
जिस पर हम सब की कहानी
फड़फड़ाती है फीड हो जाती है,
कोई बाँचता नहीं दिखता
गो कि एक राग बुहारने सा
बराबर छिड़ता रहता है
अनवरत अनाम नाट्य मंच पर।

fd lku

उनका अन्न उनका नहीं
किसी आन का है,
वह देखते हैं
और खुश हो जाते हैं
कि अबकी फसल लहलहाई
जिससे देश में समृद्धि आई,
सूखे के दिन भी आए
रुखी–सूखी खाई
फिर दोनों पति–पत्नी
आपस में बतियाएँ,
सूखे में न सही
उस हरियाली में भी क्यों
घर में बहार न आई,
चूल्हे को पत्नी ने पानी से बुझाया
उसकी पगड़ी को हाथों में उठाया
सर के नीचे रख
उसका तकिया बनाया
फिर सोते हुए खर्राटा लगाया।

d|N u dguk

भोर
घट जाने के पहले
मुझे उठ जाना होगा
इससे पहले कि
नई सुबह एक चिड़िया
डाल पर नया गीत गाए,
इससे पहले कि
रौशनी का ताप
मेरे शरीर को गरमाए,
मैं कहाँ जाऊँगा
यह प्रश्न उतना जायज नहीं
जितना यह कि
मैं कहाँ से आया था
किसी का प्रेम बनते हुए
किसी का भार बनते हुए
और असंख्य लोगों का
कुछ भी न बनते हुए का
पश्चाताप लिए,
तुम्हारे इस भूमि को
क्या–कुछ मैं दे पाया
इस हवा से कैसा नाता बना पाया
क्या–कुछ ले दे पाया

यह सवाल इतना गहरा नहीं
जितना कि
मेरे आने के ठीक बाद
और जाने के ठीक पहले
तुम्हारा कुछ न कहना
एक आभास दिलाया
जो समझ में न आया।

;g NkVh dgkuh

यह छोटी कहानी
कही नहीं गई
न गढ़ी गई हमारे–तुम्हारे बीच
ये तो रौंप दी गई
इतिहास के अँधेरे खेत में
जिसे पलकों की खुरपी से
और आँखों के कुँए से
बराबर खुर्पियाता और
सींचता रहा
मैं तुम्हे याद करता और
भुलाता रहा।

rksrs

विचारों के तोते
दिमाग के पिंजरे में
शोर मचाते हैं,
कोई सैयाद
बंद कर गया था इन्हें
जिससे मुक्ति के दाने की
गुहार लगाते हैं,
सभी तोते उसे
भगवान् मानते हैं।

p|i jguk

अनाज से भरी डेहरी
कितना भरोसा दे सकती है उम्र को ?
हमारे पस्त होते हौसले
जिंदगी की चौखट पर ढेबरी के मानिंद
लड़ नहीं सकते लालटेन या फिर
चालीस वाट के बल्ब से,
पतंग तो उड़ेगी और कटेगी भी
पर कौन उसे चाहता है
ये सवाल गहराता है
जब बच्चे दौड़ते नहीं दिखते उसके पीछे,
कोने में खड़याई छड़ी
किसी बूढ़े के काम नहीं
लॉन में घुस आये कुत्ते को
खदेड़ने के काम आती है जब
हमारी तालाश घूँघट ओढ़े
विदा हो जाती है सेहरा बाँधे
चुप्पी के संग,
चुप रहना इस सदी में ही नहीं हमेशा से
अमोघ ढाल रहा है
जिस पर कोई ब्रह्मास्त्र
काम नहीं कर सका है।

o: LrC/k [kM: g

वीरान जंगल में
बही हवा
जीवन का रहस्य वे
समझ गए
पत्ते हिल गए
किसी शाख पर बैठी चिड़िया ने
गाया इसका गान
सभी उड़ चले
पंख झर गए,
आदमी ने उसे उठाया
गजल जो कभी अधूरी लिख छोड़ी थी
डायरी के किन्ही पन्नों पर
उसके बीच में दबाया
अपनी व्यथा को इधर–उधर सुनाया,
सब सुने न सुने
पेड़ों ने सुना
फिर वहीं खड़े रहे..
आदमी जब से है
पेड़ तब से हैं
सदियों से खड़े हैं
पर वे स्तब्ध हैं।

pliy

ग्रंथों में लिखा है
अनवरत चल रहीं चेष्टाएँ चपल हैं
यही तुम्हारे दुःख का कारण हैं,
जो लिख गए वही गाथा है
समय पर जो याद आ जाए
वह इतिहास नहीं
चेष्टा है,
कौन कहता है कि वह कुरुक्षेत्र था
वह तो चपल भूमि थी
तब भी और अब
पहले विश्व युद्ध में
या फिर दूसरे में भी
तुमने किसी भूमि का नाम सुना ?
कोई उस्ताद है
जिसने समझ लिया है
शब्दों का रहस्य,
सुलतान वही काबिल समझे गए
जो सल्तनतों पर आक्रमण कर के नहीं
धीरे–धीरे तख़्त पर काबिज हुए
शब्दों की तरह
मंत्र बनते हुए
भूलते–जपते एक–एक दाना,

चेष्टाएँ चपल हैं चलेंगी ही
दिमाग में नहीं तो कहीं और
यह जो जानते हैं
वही उस्ताद हैं,
हमारी चेष्टाओं को बुद्धि से घुटनों तक
और फिर घुटनों से पैर के तलवों तक
ला छोड़ा
'चपल' शब्द को
तकनीक का जीता–जागता
मिसाल बना दिया,
उसने हमें गले में माला नहीं
तलवों में चप्पल पहना दिया।

i lhuk

उसके बुसर्ट पर
पसीने से ऐसे छपते हैं आकार
कंधे पर जैसे किसी के उलटे लटके हों पहाड़,
दूर से देख चढ़ने से कतराता हूँ
जिंदगी मैं तुमसे दूर
और दूर चला जाता हूँ,
सूख कर चमकता है तुम्हारे
बदन पर ऐसे यह पसीना
पहाड़ों पर दूर जैसे उभर आईं हों काइयाँ
होश के फिसलन से घबरा जाता हूँ
जिंदगी मैं तुमसे आँख फिर
चुराता चला जाता हूँ,
बूँद–बूँद जब रसता है तुम्हारा पसीना
चट्टानों से बहता हो जैसे कोई झरना
अपनी साँसों के डूब जाने से अफनाता हूँ
जिंदगी मैं तुम्हे चाह कर भी
न चाह पाता हूँ
मैं तुमसे दूर–दूर और दूर
चला जाता हूँ।

guj

देखो
शिल्पियों को
अब शिलाओं में
नहीं उभारतें
देवी–देवताओं का रूप,
उन्हें 'वाह' नहीं
'आह' की ज्यादे खबर है
इसलिए
लोढ़ो और सिलबट्टों में
लिखतें हैं वह
करीने से
हुनर और गरीबी का
इतिहास।

Hkk"kk

तुम इसे समझते रहे कविता
और मैं खोजता रहा भाषा
कभी दो दिन
कभी चार
और कभी महीनों बाद
लिखता रहा चूकते–चूकते
कलम से निकलती स्याही की तरह
धीरे–धीरे भाषा,
हमनें तो खोजी है
सिर्फ ध्वनि में भाषा
या कभी–कभी
आँखों में
पर
जिंदगी की भाषा,
खेतों में पकते बालियों के लिए
चूल्हा हो जाती है
पकते आम के लिए चीनी
शरीर के लिए गर्मी
और सड़ते उच्छिष्ट के लिए
अदृश्य टेक्नोलॉजी,
तुम पढ़ो इसकी भाषा
इसका बजता छंद

मात्राओं में दिन–रात की तरह
आवृत्ति में पूरी
ऋतु–मास की तरह
जीते दौड़ते सुस्ताते
उठते बतियाते
पशु–पक्षियों मनुष्यों में
राग की तरह
और मृत्यु से गूँजते
स्वयंभू
तानपुरे से निकलते
गांधार की तरह।

dFkk

कथा जब–जब लिखी जाएगी
किसी की अपूर्ण व्यथा कही जाएगी,
झूठ हैं शब्द
इसे समझ पाओगे
डबडबाएंगी आँखें
उन्हें शब्दों सा
उसे सुना न पाओगे,
हम रहे न रहे
जिंदगी को कभी
समझा न पाओगे।

dku le> ikrk g

कहाँ आता है वसंत
वह तो समय लाता है
अँधेरा किवाड़ को बंद कर
दुःख लाता है,
हम अपने–अपने दरबों में बंद
जिंदगी तलाशतें हैं
कहाँ आती है जिंदगी
यह कौन समझ पाता है ?

igy&igy

अनायास ही मिलता है सब कुछ
जैसे हींग
जायफल
लौंग
आलू
और स्वाद..
जैसे आकाश
हवा, धूप, पानी का वरदान...
जैसे चमड़ा
देखती आँख
साथ चलती किसी देह का साथ
फिर अकस्मात प्यार....
सदियाँ बहुत बाद में
ले आ पातीं हैं
बहीखाते में उनका हिसाब,
धीरे–धीरे
शब्द की तिजोरियाँ
जब्त कर देती हैं
उनकी कीमत
उँगलियों के रोजनामचे का
मंडी–बाजार में नही देता कोई जवाब,
फिर पीढ़ियाँ

चुकती जाती हैं बेहिसाब
कोई है...? मैं पूछता हूँ चीख कर
बार–बार
कोई नहीं देखता अनायास,
बचे हुए लोग
हमेशा बचे रह जाना चाहते हैं
किसी नायाब मसीहा की तलाश में
जो उनको
गणित समझाएगा
कविता के पद सुनाएगा
व्याकरण से
विस्मृत वैतरणी को
पार करवाएगा।

vfrfFk

अतिथि तुम कब आए
ध्वनि में शब्द का रूप भरते
ताप से आग होते
धीरे–धीरे वैश्वानर फिर दावाग्नि
बड़वाग्नि होते
सिगड़ी–चूल्हे में गुनगुनाए
अतिथि तुम कब आए,
सर–सर–सर पत्तों को नचाए
पंछी के पंख को भर–भर लुटाए
गगन चुम्बन का पाठ सुनाए
अतिथि तुम कब आए,
माटी की किताब पर
फूल घाँस और जाने क्या–क्या
कविता लिख लाए...
अतिथि
तुम्हारी आँख फिर
क्यों भर आए ?
बताओ
कहाँ–कहाँ मंडराए
घुमड़ाए
झर–झर–झर
झर आए
बताओ अतिथि
तुम क्यों आए।

vkx

हम बदल गए
जंगलों से अलग हटकर
सपाट मैदानों में
कुनबों की दीवार खड़ी कर
चूल्हे में आग जला कर
भूल गए कच्चे खाने का स्वाद,
हमने खोजी है आग
अन्दर नहीं बाहर
कारखानों में
मंदिर–मस्जिद
और गुरूद्वारे में,
हमने खोज कर जलाई आग
दीप जलाकर और
जब–जब इससे
काम न चल पाया
तो इन्हें ही
मशालों में जलाकर
धूं–धूं कराती भड़काई आग,
आग अदृश्य है अन्दर पर बाहर
हमने कर रखा है उसे कैद
माचिस की डिब्बी में,
हम जानते हैं
रगड़ से कैसे पैदा होगी आग
आदमी और आदमी की रगड़
से हमने महकी है
चमड़े की आग
हम जानते हैं
उसका स्वाद।

gekjh Hkk"kk

फुसफुसाती सी जो
सुनाई पड़ जाती है यह जबान
हमारी नहीं,
शब्द कोश भी यही कहते हैं
कि फुसफुसाना फुस से बना है
अरबी साँप को गुरु मान कर
वह इस शब्द को ले आए थे यहाँ
धमकाते हुए और बाद में बहुत पीछे
इस शब्द का व्याकरण बदल डाला
अंग्रेजों ने... फुसलाते हुए।
तुमने अंग्रेजी में इस शब्द को
कहीं सुना क्या .... ?
मैंने बचपन में अपने गाँव में पटाखा फोड़ते वक्त
इस शब्द को देखा था ..... सुना भी था
फुस होते हुए तभी से आज तक
मैं इस शब्द के बरक्स अपनी भाषा में
कोई शब्द ढूंढ रहा हूँ।
शब्द तो मिला नहीं
उसी भाषा में एक और शब्द मिल गया
भिनभिनाते हुए
भिनभिनाना शब्द जरूर उन्होंने
मक्खियों को देख कर नहीं सीखा होगा

यहाँ की यात्रा में पाया होगा,
हम भिनभिनाते ही तो रहें
दुःख दर्द को महिमा मंडित करते
इस ध्वनि को तंत्र का मंत्र समझ कर
उनके सामने,
तुम्हें नहीं लगता
तुम्हारी पूरी भाषा
हाथ जोड़े भिनभिना रही है सदियों से ?

mnk l h&1

अब खिड़कियों से
नहीं झाँकती उदासी
चमकती है कौवों के बीच
छत के ऊपर,
अब बिस्तर पर
लिपटी नहीं रहती उदासी
टंगी रहती है चौराहों पर
सिग्नल के अंदर,
उदासी अब बाँची नहीं जाती
और न ही रखी जाती है जेब में
वह फहरती है झंडा गाड़े
मेरे देश के धरती के ऊपर ।

mnk l h&2

शाम होते ही आ जाती है
लौटती घोंसले में चिड़िया की तरह
मेरे पास उदासी,
मेरे पास एक–एक कर
आती हैं
अलग–अलग चिड़ियों
की बारात,
मेरे पास
हाँ मेरे पास
आ ही जाती है
खामोशी
उनके चहचहाने के साथ
रात हो जाने के बाद ।

xhr

मैंने अपने लिए
जिंदगी के पेड़ पर
भविष्य के घोंसले में
डाल रखी है
विचारों की घास
ऋतुओं की गर्माहट उसे सेकेगी
आदमी जैसे कौवे के झुण्ड से अगर
बच गया मेरे सपने का अंडा
एक ऊपरी कवच टूटेगी ।
नस्ल तो पता नहीं
कोई पंछी उसमें से निकलेगा
अपने पंख में आकाश को भरे
जीवन का गीत सुन पाएगा ।

lp&>B

मेरे सच में
झूठ बस इतना है
तेरे झूठ में
सच भर जितना है।

xk/kh&ukV

कितना भारी हो जाता है
कोई–कोई नाम
कि हम उसके गूँज के इर्द–गिर्द
रचते हैं इतिहास,
नारों के बीच लेते हुए उसका नाम
विश्वास के साथ
तोड़ते हैं अपना दम,
मैंने उसे आज बिना नाम के
तस्वीर में मढ़ा पाया
जिसमें उसके छाती के बाल
सफेद थे और उसका चश्मा
बिना किसी अर्थ के
कानों के ऊपर टंगा
कविता के अंत की
खड़ी पाई सा नजर आया...
धीरे–धीरे जैसे लिख रहा हूँ यह पंक्ति
महावीर के शब्दों में
पूरा ही कर रहा हूँ यह कार्य...
तुम जरा ध्यान से समझना उन्हें
जो पहले तस्वीर से निकालते हैं
उसका चश्मा
और उसकी लाठी अपने हाथों में
लेते हुए बाँधते हैं झाडू...
तुम कतार में खड़े हो
मंदिर के नहीं
मस्जिद के भी नहीं
आदमी के पीछे
जिसकी कहानी
अभी भी वे ही लिखे जा रहे हैं
पृष्ठ दर पृष्ठ।

fy[kuk

मेरे लिए लिखना
कुछ कह न दूँ
से बच जाने का बहाना है
अपने और उसके विरुद्ध
किसी साजिस को
छुपा ले जाने के उपक्रम के साथ
रोटी, कपड़ा और मकान
की चुप–चाप तलाश करना और
जिंदगी को जी लेने के जैसे
बड़े नाटक का हिस्सा बन जाने का
का एक अदना सा फसाना है ।

dhy vkj vkneh

आदमी कहीं भी रहे
वह ठोंकेगा ही कील दीवार पर
हथौड़ा और कील
तकदीर और आदमी
कितने मिलते–जुलते
शब्द हैं,
मैं बनाना चाहता हूँ एक चित्र
जिसमें तकदीर को मैं
दूँ हथौड़े सी एक शक्ल
और कील को आदमी सी,
व्याकरणों के वहां
आदमी के हाथ में हथौड़ा
एक औजार है
ज्योतिषियों के वहां
तकदीर का खिलौना है आदमी,
मैं ढूंढता हूँ आदमी
तकदीर से अलग
घर, चहार्दिवारियों से दूर
खुले नीले आकाश के नीचे....
किसी ने समझाया
आदमी को ढूँढना
और इश्वर को ढूँढना
यह सब किताबों में छपा
महज एक मजाक है...

ftanxh vkSj ePNj

जिंदगी भी मच्छर की ही तरह
काटती है पीछे
रीढ़ की हड्डी के पास,
कोई पास की दीवार का कोना
खुजलाने के लिए
बन जाता है खुदा,
हम अस्तित्व में बढ़ते हैं
नाखून की तरह
कोई बीमारी सा विज्ञान
नेलकटर की तरह
कुतर जाता है फिर हमें,
मैं पगडंडियों के ऊपर
देखता हूँ जब भी
उड़ती तितलियों को
सब कुछ भूल कर
उनके पंख के निशां
हवाओं में नहीं
अपने ह्रदय में
खोजने लग जाता हूँ ।

pk; vkSj ;k=k

उनसे पूछो
कि शब्द चहा से
चाय तक की यात्रा हुई
या चाय से चहा तक,
यात्रा भी कितनी अजीब होती है
जो हमेशा मिलवाती है
भिखमंगों से,
ज्योतिषी ने कहा था मुझसे
उनकी मदद करना
कुंडली के खराब ग्रहों को
उकसा देना है
मैं ठिठक गया सो
देखता रहा उस भिखमंगन को
जो कुछ संभाल रही थी
अपने आँचल में,
उसकी हड्डियों पर लिपटी साड़ी
परंपरा का परचम लहरा रही थी
और उसके गले में लटका ताबीज
जिंदगी का मूक धर्म समझा रहा था,
मैंने चुपके से हवाओं से
उसके पास संदेसा भेजवाया
गाड़ी चालक ने इधर हॉर्न बजाया
बचपन में जैसे अटक जाता था
आम को तोड़ते वक्त झटहा
वैसे ही हवाओं में
अटका रह गया
मेरा कुछ कहना ।

[kcj

गोबर पर पत्थर मारता है बच्चा
नई कार पर पूजे स्वास्तिक चिन्ह पर
बीट कर देता है कबूतर
दुपहरी में भरे बाजार में
बांग दिया मुर्गे ने,
मेढ़कों ने पुजारियों की तरह
इधर बारिश की भविष्यवाणी
करना छोड़ दिया है
रास्ते अभी गीलें हैं
कल रात की बारिश से,
यहाँ कोई खबर नहीं है
मलेरिया डेंगू, चिकनगुनिया
या जापानी इन्सेफ्लाइटिस की
छोट–छोटे मच्छरों ने
अभी सीखा नहीं है यहाँ
डंक मारना
एक पीपल का पेड़ उखाड़ दिया गया
उनके आँगन से
एक गुलाब का पेड़
ला कर लगा दिया गया उनके
बरामदे में
गौरैया ने धीरे से
कार पार्किंग में अपना घर बनाया
आदमी ने नहीं
कल की भीषण आंधी ने
मधुमक्खियों का छत्ता गिराया।

jkLrk

एक आह
चमक सी जाती है,
तुम्हारा चेहरा
फूल सा
जंगलों में कहीं किनारे
झाड़ियों के बीच लहराता है,
मैं आफताब सा
कभी भी न पहुँच पाया उझ तक,
एक रोशनी की तरह
अनंत काल से
उगता हूँ देखता हूँ
ढलता हूँ गुम हो जाता हूँ,
उम तक की यह यात्रा
इतनी कठिन क्यों है
इसका जवाब खोजे भी
नहीं खोज पाता हूँ।

e|gkojk

हम हर बार कुछ
आश्वस्त हो जाते हैं
और जिन्दगी थोड़ा और दूर
खिसक जाती है,
कितना असहाय हो जाता है आदमी
किन्ही सत्य के क्षण में
जहाँ सत्य को न जानना
ही सत्य हो जाता है,
आँखों के पास दिमाग नहीं होता
इसीलिए वो उतर जाना चाहती हैं
चमड़े, खून, मज्जा और
और यहाँ तक कि आत्मा के आर–पार,
लोगों ने एक से एक मुहावरों से
समझी है दुनिया,
मेरे देखे
आदमी अपने आप में
मुहावरा है
सदियों से ।

d|N Hkh

चप्पलें उन्हीं की छूट जाती हैं
जिनकी अवकात उनकी चप्पलों से नहीं
उनके चहरे से लगाई जाती है,
महावीर ने चप्पल और वस्त्र
छोड़े नहीं त्यागे थे,
कलाकारों ने बेहिसाब
बनाई उनकी तस्वीर
मैंने देखे हैं अनगिनत पाँव तस्वीरों में जिसमें चप्पल नहीं है
कहीं बेवाई तक नहीं फटी
और न ही धूल–धूसरित दिखा चेहरा,
कला और अस्तित्व
का यह भेद
कैसे गूंज रहा है इस वक्त
यहाँ सेवाग्राम रेलवे स्टेशन पर ,
गाड़ी आई वो दौड़ गई
बिना परवाह किए
अपनी चप्पलों की
अपना गट्ठर लादे
किसी कविता
किसी कहानी
किसी नाटक का
बिना हस्तक्षेप किए,
इधर शाम ने अगला वाक्य लिखा
कोयल ने उसमे अर्थ भरा
हवाएँ बह रही हैं
या शाम को पलट रही हैं
पन्नों की तरह ।

c) if.kek

बुद्ध पूर्णिमा
का यह चाँद
गड़े मुर्दों को
इधर अब उठा देता है,
आदमी के अंदर
मुर्दे बोलते नहीं
या तो लेटे रहते हैं
या खड़े हो जाते हैं
आदमी की भाषा में
मुर्दे की दुर्गन्ध
क्या बुद्ध पूर्णिमा के
चाँद तक पहुंची होगी ?
चाँद के साथ जो दिखता है
आदमी उसे देख सकता है
चाँद के साथ जो नहीं दिखता
आदमी ने उसे भी देख लिया है
चाँद ने आदमी को कब देखा होगा
बुद्ध के बाद ?

Hkk"kk d ikj

तुम ही समझ सकते हो
यह कविता जो
जनपद, मुहल्ला, शहर से नहीं
उठी है यह वहीं से जहाँ से
पहली बार आकर तुम्हारी आँखें
मेरे अतल गहराई में बैठ गई थीं,
वहीं से कुछ कहा था मैंने तुम्हे
बिना किसी भाषा के
बिना किसी अर्थ की चाह लिए,
किसी उत्तर की चाह
कैसे छोटी हो जाती है भाषा के पार।

और

जिंदगी की चाह
कैसे चमकती है
सूर्य की रोशनी की तरह
तुम जानते हो।
मैंने यह जो शब्द लिख दिए हैं तुम्हारे लिए
वह मेरी बहती कविता की चहारदीवारी हैं
तुम ही तैर सकते हो इसमें
और चुन सकते हो मोती।
तुम्हारा आना
छंद में लिखना
फांसी लगा कर
मर जाने जैसा है
वैसे ही जैसे तुम्हें कुछ कहना
जो है नहीं सो कह देने जैसा है,
रात आएगी दिन आएगा
आएगी दुपहरिया भी
इन सब के बीच
तुम्हारा आ जाना
जिंदगी जैसा है।

आदमी हो जाना

मेरे भविष्य ने धीरे से कहा
जीते जी फालतू हो जाना
बुढ़ापा है,
मेरे अतीत ने जोर से दोहराया
आदमी किस चिड़िया का नाम है ?
मेरा आज परेशान है
बुढ़ापे और बचपन की सुबह–शाम से,
मैं नाँव नहीं हो सकता
बुढ़ापे और बचपन की
पतवार लिए
मैं दुपहर भी नहीं हो सकता
सुबह और शाम की नाँव लिए
आदमी होना इस नई दुनिया में
चमत्कार है
उसके अतिरिक्त सभी हैरान हैं।